ICERT

Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal

@2024 International Council for Education Research and Training 2024, Vol. 03, Issue 03, 257-264
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7733

शहीद-ए-आजम भगतसिंह का भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में साहसी बलिदान

वेताळ, अनिता

हिंदी विभागाध्यक्ष, लोकनेते रामदास पाटील धुमाळ कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय राहुरी

शोध सारांश

शहीद-ए-आजम भगतसिंह का भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन के सबसे प्रभाव- शाली युवा क्रांतिकारियों में से एक माना जाता है| उनके भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन के साहसी बलिदान को 23 मार्च शहीद दिवस के रूप में याद किया जाता है | इस दिन 23 मार्च 1931 को भगतसिंह राजगुरू और सुखदेव थापर को फांसी दी गई थी | भारत देश को आजाद करने के लिए इन वीर सपूतों ने हँसते - हँसते फांसी का फंदा चूम लिया था | इसलिये इस दिवस को शहीद दिवस कहा जाता है | उस समय भगतसिंह महज 23 वर्ष के थे | 23 वर्ष की अल्पआयु में ही अपने साथियों के साथ मातृभूमि के लिये अपने प्राणों की आहूति दी थी, जिसके कारण भगतसिंह आजादी की लडाई के समय नवयुवकों के गले के ताईत बन गये थे | "इन्कलाब जिंदाबाद" के इस प्रसिद्ध नारे ने भारतीय युवाओं के दिल, दिमाग और शरीर की एक-एक नस में देशभक्ति का स्वर मुखरित कर दिया था | भगतसिंह का जन्म 27 सितम्बर 1907 प्रातः 09.00 बजे बंगा गाँव, जिला – लायलपूर में हुआ था | उनके पिता का नाम सरदार किशनसिंह संधू और माता का नाम विद्यावती कौर था | इनके जन्म के समय पिता किशनसिंह और घर के कुछ सदस्य जेल में थे | उनके चाचा अजितसिंह हर समय एक प्रेरक शक्ति और आदर्श के रूप में उनके सामने थे | देश के स्वतंत्रता के लिए जीवनभर कार्य करनेवाले पिता सरदार किशनसिंह उनके प्रेरणा स्थान थे | क्रांतिकारी परिवार से प्रेरित भगतसिंह के अंदर साहस, बलिदान और देशभक्ति कि भावना का विकास हुआ| अपने शुरुआती दिनों मे भगतसिंह ने महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन का समर्थन किया | किंतु बाद में गांधीजी ने असहयोग आंदोलन रद्द कर देने के कारण उनमे थोडा रोष उत्पन्न हुआ | पर पुरे राष्ट्र की तरह वे गांधीजी का सम्मान करते थे | जलियांवाला बाग हत्याकांड के समय भगतसिंह महज 12 साल के थे | इस हत्याकांड ने भगतसिंह के मन में अंग्रेजो के खिलाफ गुस्सा भर दिया | साथ ही काकोरी कांड में चार क्रांतिकारियों कों फांसी और 16 अन्य क्रांतिकारियों कों कारावास की सजा से भगतसिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए की उन्होने अपनी पार्टी नवजवान भारत सभा का हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन में विलीन कर दिया और उसे एक नया नाम दिया, **हिन्दुस्तान सोशालिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन |" सरफरोशी की तमन्ना आज हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजू–ए–कातिल में है"** | ये

@2024 International Council for Education Research and Training 2024, Vol. 03, Issue 03, 257-264
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7733

लब्ज उन क्रांतिकारियों के है जिनके साहस, बलिदान और शौर्य की गाथा देशभर याद की जाती है | उनकी शहादत को देश हमेशा नमन करता है |

बीजशब्द: कमीशन, राष्ट्रवाद, क्रांतिकारी, शहीद, मुकदमा, ट्रिब्यूनल, अभियुक्त, सरफरोश, इन्कलाब

विषय प्रवेश:-

❖ **जालियाँवाला बाग हत्याकांड**

13 एप्रिल 1999 को एक अत्यंत दुखद घटना घटी अमृतसर में स्थित जालियॉवाला बाग में अंग्रेजों द्वारा निहत्थे मासूमों पर बेछूट गोलियाँ चलाई गई । इस घटना को बीत चुके आज कई साल गुजर गये किन्तु आज भी इसके जख्म ताजा से लगते है। इस दुःखद और दर्दनाथ घटना को भारत के इतिहास की काली घटना के रुप में याद किया जाता है, जब यह नरसंहार हुआ भगतसिंह सिर्फ बारह साल के थे। इस घटना ने भगतसिंह के बालमन पर गहरा असर छोडा । बारह साल के भगतसिंह स्कूल से पैदल चलकर बारह मील दूर इस बाग में चले गये । लोगों के खून से लथपथ मिट्टी उठाई, माथे से लगाई और थोडी -सी एक शीशी में भरकर लौट पडे | उस समय उनका मन बडा उद्विग्न था, खून से रंगी मिट्टी की वह शीशी अपनी बहन को दिखाकर बोले - "अंग्रेजों ने हमारे बेहद आदमी मार दिए है।" उसके बाद कुछ फूल तोडकर ले आये और शीशी के चारो ओर रख दिए । बाद में कई दिनों तक फूल चढाने का सिलसिला चलता रहा । ये बलिदान की वंदना थी। खून-खून को पहचान रहा था। खून-खून को पुकार रहा था। इस घटना ने उनके बालमन पर अंग्रेजों के प्रति गुस्सा भर दिया था। उनका बाल मन स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कुछ कर दिखाने के लिए छटपटाने लगा। यही वह समय था जब उन्होंने देश के लिए अपना सबकुछ देने का फैसला किया। गांधीजी ने जब असहयोग आन्दोलन वापस लिया तो भगतसिंह का अक्रोश उन्हें क्रांतिकारियों की राह पर ले आया और उन्होंने चंद्रशेखर आजाद के साथ मिलकर क्रांतिकारी संगठन तैयार किया। जिसे नाम दिया **"हिन्दुस्तान सोशालिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन"** जिसे संक्षेप में (एच.एस.आर.ए.) भी कहा जाता है। सन 1924 से लेकर लगभग आठ वर्ष इस संगठन का पूरे भारतवर्ष में दबदबा रहा। यह संगठन चंद्रशेखर आजाद की आकस्मिक मृत्यू के साथ समाप्त हो गया।

❖ **काकोरी कांड**

भगतसिंह ने असफलताओं से घबराकर हार मानना नही सीखा था, अपितु असफलता को झेलकर उनके इरादे और भी मजबूत हो जाते थे। सरकार के अन्याय, अत्याचारों और दमनकारी नीतियों का प्रत्युत्तर देने के लिए लाहोर में क्रांतिकारियों का एक गुप्त दल

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 03, 257-264
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7733

सक्रिय था इस दल में चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मल, रोशनसिंह बटूकेश्वर दत्त आदि महान क्रांतिकारियों के साथ मिलकर भगतसिंह ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आंन्दोलन शुरु किये। एक बार इन सभी क्रांतिकारियों ने मिलकर बडे पैमानेपर ब्रिटिश सरकार पर हमला करने की योजना बनाई किन्तु इसे अंजाम देने के लिए धन की आवश्यकता थी। तभी रामप्रसाद बिस्मल ने एक सुझाव दिया कि सहारनपुर से लखनऊ जानेवाली पैसेंजर ट्रेन मे सरकारी खजाना जानेवाला है। जिसे हमे लूट लेना चाहिए। सुझाव अच्छा था। क्रांतिकारी दल ने 9 अगस्त का दिन तथा लखनऊ से आठ मील की दूरी पर स्थित **'काकोरी'** नामक स्टेशन निश्चित किया। ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध युदध छेडने की इच्छा से हथियार खरीदने के लिए ब्रिटिश सरकार का ही खजाना लूट लेने की, ऐतिहासिक घटना 9 अगस्त 1925 को घटी। अगले दिन सरकारी खजाना लूट जाने की खबर चारो ओर फैल गई। **'काकोरी कांड'** ने सरकार को हिलाकर रख दिया । अगले आदेश पारित हुए और क्रांतिकारियों की धर पकड आंरभ हो गई। एक क्रांतिकारी पकडा गया जिसने सरकारी गवाह बनकर सारी बात उगल दी। दो दिन के अंदर अनेक क्रांतिकारी पकडे गये। लखनऊ की अदालत में डेढ वर्ष मुकदमा चला, मुकदमा पूर्ण होने के बाद काकोरी षडयंत्र के अंतर्गत रामप्रसाद बिस्मिल, रोशनसिंह, राजेंद्रनाथ लाहिडी और अशफाक उल्ला खॉं को फॉसी की सजा दी गई। सजा मिलने के छह दिन पूर्व चंद्रशेखर आजाद ने भगतसिंह, बटुकेश्वर दत्त आदि के साथ मिलकर बंदी क्रांतिकारियों को जेल से छुडाने के लिए अनेक प्रयास किये लेकिन असफलता हाथ लगी । अततः चारो वीर हसते- हसते फॉसी पर लटक गए।

❖ **<u>सायमन कमिशन</u>**

ब्रिटिश सरकार ने 8 नवंबर 1927 में भारत सरकार अधिनियम 1919 की समीक्षा के लिए सात ब्रिटिश सांसदो का समूह लॉर्ड साइमन की अध्यक्षता में गठीत किया था। जो 3 फरवरी 1928 को बंबई पहुँचा । भारत की धरतीपर पैर रखते ही मानो संपूर्ण देश एकजुटता की डोर में बॅंध गया। उस दिन देश में हडताल घोषित कर दी गई। तथा काले झंडो एवं **"साइमन कमिशन वापस जाओ"** के नारे से कमीशन का स्वागत किया गया। बंबई से कमीशन दिल्ली रवाना हुआ। लेकिन यहॉं भी ट्रेन से बाहर कदम रखते ही "साइमन कमीशन वापस जाओं" के नारे से स्टेशन गुँज उठा। अब मद्रास की बारी थी। यहॉं भी प्रदर्शनकारियों ने कमीशन का भरपूर स्वागत किया। लेकिन इस बार अंग्रेजी अधिकारियों के सब्र का बॉंध टूट गया और उन्होंने फायरिंग कर तीन प्रदर्शनकारियों को मार दिया। कलकत्ता में मद्रास की घटना कि पुनरावृत्ति हुई। कमीशन का पॉंचवा पडाव लाहौर में था, जो उस समय क्रांतिकारियों का प्रमुख गढ माना जाता था। जिस दिन कमीशन लाहौर आ रहा था उस दिन भगतसिंह स्वयं लाला लजपतराय को साथ लेकर स्टेशन पहुँच गये। भगतसिंह उन्ही के साथ खडे रहकर **"इन्कलाब जिंदाबाद"** के नारे लगा रहे थे। उनके बीच लालाजी

@2024 International Council for Education Research and Training 2024, Vol. 03, Issue 03, 257-264
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7733

सिंह की भॉंति खडे थे। निर्धारित समय पर ट्रेन स्टेशन पर आ रुकी। कमीशन का स्वागत काले झंडों एवं **"साइमन कमिशन वापस जाओ" "अंग्रेजी सरकार वापस जाओ"।** के नारों से हुआ। प्रदर्शनकारियों की भीड निरंतर बढती जा रही थी। स्टेशन से बाहर निकलने के सारे मार्ग अवरुदध हो चुके थे। तब जब मामूली लाठीचार्ज से काम नही बना तो पुलिस अधिकारी स्कॉट ने मोरचेपर भीषण प्रहार करने का आदेश दिया। आदेश मिलते ही पुलिस सुपरिटेंडेंट एस.पी. सांडर्स लाठी लेकर बेरहमी से प्रहार करने लगे। मोरचे के नेता लाला लजपतराय थे, इसलिए उसके प्रहारों का मुख्य बिंदू वे ही थे। लालाजी पर लाठी का प्रहार इतनी क्रूरता से किया कि उनके माथे पर लगे तीव्र प्रहार से रक्त का फव्वारा फूट पडा। आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा। तभी उनका स्वर गूँजा **"पुलिस की इस जालिमाना हरकत के विरोध में प्रदर्शन स्थगित कर दिया जाए।"** अनिच्छा पूर्वक मोरचा तोड दिया गया। उसी शाम एक विशाल सार्वजनिक सभा की गई, बुरी तरह से घायल होने के बाद भी लाला लजपतराय इस सभा में उपस्थित हुए और सिंह की तरह गर्जना करते हुए बोले, "मैं घोषणा करता हूँ कि, मुझपर पडी एक -एक लाठी ब्रिटिश सरकार के कफन में अंतिम कील का काम करेगी।" 17 नवंबर 1928 को पंजाब केसरी लाला लजपतराय की मौत हो गई। लालाजी की मृत्यू से सारा देश भडक उठा। चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव जयगोपाल, किशोरीलाल, महावीर सिंह तथा दुर्गा देवी आदि क्रांतिकारियों ने लालाजी की मौत का बदला लेने का निर्णय लिया। लालाजी की मौत के ठीक एक महिने बाद 17 दिसंबर 1928 को ब्रिटिश पुलिस अफसर सांडर्स को गोली से उडा दिया । और अपनी प्रतिज्ञा पुरी कर दी।

❖ <u>असेंबली में बम फेंकना</u>

भगतसिंह मन-ही -मन अत्यंत उद्विग्न थे । उन्होंने ऐसा कार्य करने की ठान ली थी, जिससे एक ओर सरकार की नींद उड जाए, वही दूसरी ओर देशवासियों के निष्क्रिय मन में चेतना जाग उठे। वे एकजुट होकर अंग्रेजों को देश से खदेड देना चाहते थे। 8 अप्रैल 1930 आज असेंबली में जन-सुरक्षा बिल औदयोगिक विवाद बिल - दो महत्वपूर्ण बिल पारित होने वाले थे। इस बिलों के पारित करने का अर्थ गुलामी की बेडियों में जकडे भारतीय जन-मानस को एक और बेडी में जकड देना। भगतसिंह और अन्य क्रांतिकारियों में इन कानूनों के खिलाफ अत्याधिक रोष एवं घृणा भरने लगी। वे सोचने लगे की अब कुछ ना कुछ तो करना ही चाहिए। भगतसिंह के मन में एक योजना चल रही थी। उन्हें मालूम था क्रांतिकारी संगठन का हिंसा के जरिए आगे बढाना मुश्किल है" किन्तु देश के युवा क्रांतिकारियों को क्रांति के रुप में देखा और सेंट्रल असेंबली में बम फेंकने की योजना बनाई। भगतसिंह चाहते थे कि ब्रिटिशों को इस बात का पता चले कि, इस बिल को लेकर क्रांतिकारियों और लोगों में कितनी नाराजगी है। गंभीर विचार-विनिमय के बाद 8 अप्रैल 1929 का दिन असेंबली में बम फेंकने के लिए तय हुआ और इस कार्य

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 03, 257-264
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7733

को अंजाम देने के लिए भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त सज्ज हुए। असेंबली में लोग एकत्रित होने लगे। असेंबली में इकठ्ठा लोगों में से बहुत सारे लोग इस बील के विरुद्ध थे फिर भी वायसराय इसे अपने विशेषाधिकार से पारित करना चाहते थे। जैसे ही बिल संबंधी घोषणा हुई, सदन में एक जोरदार धमाका हुआ । दो लोगो ने **"इन्कलाब जिंदाबाद"** का नारा लगाते हुए सदन के बीच बम फेका था। ये दो लोग शहीद-ए-आजम भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त थे। बम फेंकते समय इस बात का पुरा ध्यान रखा गया था कि, किसी की जान को कोई नुकसान न हो। जैसे ही बम फटा एक जोर का धमाका हुआ। असेंबली में अंधेरा छा गया। उसी समय काले -नीले धुँए से भरे हुए सभागार में लाल अक्षरों से छपे हुए परचों की वर्षा होने लगी। भागते-दौडते लोगों को गर्जना सुनाई दे रही थी। **"इन्कलाब जिंदाबाद", "इन्कलाब जिंदाबाद"** परचो पर लिखा था – **"बहरों को सुनाने को, धमाका जरुरी है"।** हालाकि बम फेकनेवाले दोनो क्रांतिकारी भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त अपने स्थानों पर प्रसन्न मुद्रा में खडे थे। मुख पर आत्मसमर्पण का अनोखा आनंद झलक रहा था। वे बार- बार गरज रहे थे। - **"इन्कलाब जिंदाबाद!, साम्राज्यवाद नष्ट हो ! दुनिया के मजदूरों एक हो जाओं!"** बहुत देर बाद सिपाहियों का एक दल डरते-डरते सभागार में आया उन्होंने दूरी से ही पूछा बम फेंकने का भयंकर कार्य आपने ही किया है ? अपनी रिवॉल्वर से खेलते हुए भगतसिंह मुसकराकर बोले हा यह काम हमने ही किया है । भगतसिंह ने अपने दोनों हाथ आगे बढाते हुए बंदी बनाने का संकेत किया। भगतसिंह ने अपना हैट उतारकर हाथ में ले लिया और दोनों पुलिस के पहरे में शांतचित्त असेंबली से बाहर आ गये। भगतसिंह बटुकेश्वर दत्त असेंबली में बम कांड में दोषी पाये गये। दोनों को उम्र कैद की सजा सुनाई गई। और बटुकेश्वर दत्त को काला पानी भेज दिया गया।

❖ भगतसिंह और उनके दोनों साथियों को फाँसी

असेंबली में बम फेंककर हुई गिरफ्तारी के बाद उनपर एक ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जे.पी. सांडर्स की हत्या में शामिल होने के कारण देशद्रोह और हत्या का मुकदमा चला यह मुकदमा भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में **'लाहौर षडयंत्र'** के नाम से जाना जाता है। सांडर्स हत्याकांड में बटुकेश्वर दत्त की भूमिका नगण्य थी, अतः मुकदमा के आरंभ होने से पूर्व ही उन्हें अलग कर दिया गया परंतु असेंबली में बम फेंकने तथा क्रांतिकारी गतिविधियों में उनकी संलिप्तता को देखते हुए उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई थी। भगतसिंह राजगुरु और सुखदेव को फाँसी। सांडर्स हत्याकांड में पकडे गये तेरह क्रांतिकारियों की टोली भगतसिंह के प्रत्येक इशारे पर मर मिटने को तैयार थी। उनके दिल, दिमाग, शरीर की एक -एक नस में देशभक्ति का लहू दौड रहा था। हथकडियों में जकडे जब ये क्रांतिकारी अदालत में आते थे तो ''इन्कलाब जिंदाबाद" और वन्दे मातरम" के नारे से भवन गुंज उठता था। उनके होंठों पर एक ही गीत रहता था। -

@2024 International Council for Education Research and Training 2024, Vol. 03, Issue 03, 257-264
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7733

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है।
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ए आसमाँ,
हम अभी क्या बताएँ क्या हमारे दिल में है।
सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।"

सरकार इस मुकदमे को अपने तरीके से चुपचाप खत्म करना चाहती थी। किन्तु यह साधारण मुकदमा थोडी न था जिसे चूपचाप खत्म कर दिया जाए। इस मुकदमे की लोकप्रियता इतनी अधिक बढ चुकी थी कि, जिस दिन अभियुक्त अदालत में लाये जाते थे, लोग दरवाजे से लेकर सडक तक उनकी एक झलक पाने के लिए घंटो प्रतीक्षा करते जिसे देखकर अंग्रेजी सरकार डर गई थी। इसलिए 12 सिंतबर 1929 को ब्रिटिश सरकार ने केंद्रीय असेंबली में एक बील प्रस्तुत किया जिसमें अभियुक्तों की अनुपस्थिति में भी न्यायधीशों को मुकदमा जारी रखने का अधिकार दिया गया। 7 अक्तुबर 1930 सुबह सबेरे ही ट्रिब्यूनल का एक संदेशवाहक जेल में आ गया था। अभियुक्त फैसला सुनने के लिए अदालत नही गये थे। उसने गंभीरता के साथ 68 पृष्ठों के फैसले को सुनाना आरंभ किया। - लाहौर षडयंत्र के प्रमुख अभियुक्तों भगतसिंह सुखदेव और राजगुरु को फाँसी की सजा। एक पल के लिए फैसला सुननेवाले लोग शांत हो गये। किन्तु भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव के चेहरों पर मुस्कराहट थी। **"इन्कलाब जिंदाबाद"** का नारा लगाते हुए वे एक दूसरे के गले मिलने लगे। 24 मार्च 1931 को प्रातःकाल भगतसिंह और उनके साथियों को फाँसी दी जानेवाली थी। लेकिन सरकार एक नई योजना बना रही थी। सरकार को भय था की इससे विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यदि लोगों की भीड ने जेल को घेरकर हिंसात्मक प्रतिरोध किया तो भगतसिंह और उनके साथियों को फाँसी देना तो दूर, उनकी जान भी आफत में आ जाएगी। इसलिए उन्होंने एक दिन पूर्व ही उन्हें फाँसी देने का निर्णय ले लिया। 23 मार्च 1931 को लाहौर सेंट्रल जेल के अंदर ही फाँसी दे दी गई। फाँसी पर जाते समय भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव तीनों मस्ती से गा रहे थे -

"मेरा रंग दे बसंती चोला मेरा रंग दे
मेरा रंग दे बसंती चोला
माय रंग दे बंसती चोला"

भारत के वीर सपूतों क्रांतिकारी शहीद-ए-आजम भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव 23 मार्च 1931 देश के खातिर हँसते -हँसते फाँसी पर चढ गए। भारतीय इतिहास में यह दिन गौरवमयी दिन के रुप में जाना जाता है। आज हम जिस स्वतंत्रता का अनुभव कर रहे है वह भारत भूमि के वीर सपूतों के साहस, बलिदान, शौर्य और अथक परिश्रम और अटूट दृढ संकल्प की गाथा है ।

❖ भगतसिंह के क्रांतिकारी विचार

शहीद भगतसिंह के पास विचार रुपी ऐसे हथियार थे जिनकी ताकत से ही भगतसिंह का संपूर्ण जीवन देश और दुनिया के लिए अविस्मरणीय बन गया। भगतसिंह के व्यक्तित्व की सबसे बडी खसियत उनके

@2024 International Council for Education Research and Training 2024, Vol. 03, Issue 03, 257-264
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7733

विचार ही थे। उनके महान विचार किसी के भी जिंदगी में जोश भरके कुछ कर गुजरने का जब्जा पैदा कर सकते है। उनके विचारों में जब्जा है क्रांति का, जब्जा है लक्षप्राप्ति का और जब्बा है कुछ कर गुजरने का जो किसी के भी जीवन को बदल के रख सकता है। उनके कुछ क्रांतिकारी विचार निम्न है -

- अपमान से भरी गुलामी की जिंदगी से तो मौत हजार गुना अच्छी है।
- क्या तुम्हे पता है कि दुनिया में सबसे बडा पाप गरीब होना है? गरीब एक अभिशाप है, यह एक सजा है।
- हमारा देश बहुत आध्यात्मिक है, लेकिन हम मनुष्य को मनुष्य का दर्जा देते हुए भी हिचकतें है।
- धर्म व्यक्ति का निजी मामला है, इसमें दूसरे का कोई दखल नही, नही इसे राजनीति में घुसना चाहिए।
- जिंदगी तो सिर्फ अपने कंधों पर जी जाती है। दूसरों के कंधे पर तो सिर्फ जनाने उठाए जाति है।
- यह एक काल्पनिक आदर्श है कि आप किसी भी कीमत पर अपने बल का प्रयोग नही करते, नया आन्दोलन जो हमारे देश में आरंभ हुआ है और जिसकी शुरुआत की हम चेतावनी दे चुके है वह गुरु गोविंदसिंह और शिवाजी महाराज, कमलपाशा और राजा खान, वाशिंगटन और गैरी बाल्डी, लाफयेटे और लेनिन के आदर्शो से प्रेरित है।
- किसी भी इंसान को मारना आसान है, परंतु उसके विचारों को नही।
- राख का हर कण मेरी गर्मी में गतिमान है मै एक ऐसा पागल हूँ जो जेल में भी आजाद हूँ ।

निष्कर्ष :-

समग्रत: से देखा जाए तो भगतसिंह एक महान स्वतंत्रता सेनानी एंव क्रांतिकारी योद्ध थे । जिन्होंने चंद्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य क्रांतिकारी सदस्यों के साथ मिलकर भारत की स्वतंत्रता के लिए अभूतपूर्व साहस के साथ ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया अ पहले सैंडर्स की हत्या और बाद में दिल्ली की सेन्ट्रल असेंबली में बम-विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य को हिलाकर रख दिया था । असेंबली में बम फेककर अपनी गिरफ्तारी दी। जिसके फल स्वरुप अंग्रेजी सरकार ने असेंबली में बम फेकने देशद्रोही होने और सैंडर्स की हत्या के कारण 23 मार्च 1931 को शहीद-ए-आजम भगतसिंह और उनके दो साथियों को फॉसी की सजा दे दी। उस समय भगतसिंह महज 23 साल के थे। सरफरोशी की तमन्ना आज हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजू-ए- कातिल में है। ये लब्ज उन क्रांतिकारियों के है जिनके साहस, बलिदान और शौर्य की गाथा देशभर याद की जाती है। उनकी शहादत को देश हमेशा नमन करता है।

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 03, 257-264
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7733

संदर्भग्रंथ सूची:-

1. सुशील माधव पाठक 1998, “भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास” संपा.हिन्दी ग्रंथ अकादमी प्रेमचंद मार्ग, राजेंद्रनगर, पटना.

2. डॉ. कीर्तिलता, 1967, “भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी साहित्य” संपा. हिदुस्तान एकेडेमी, इलाहाबाद.

3. विश्वप्रकाश गुप्त, मोहिनी गुप्त, 2009, “सरदार भगतसिंह व्यक्ति और विचार” राधा प्रकाशन नई दिल्ली, पृ.87,88

4. वीरेंन्द्र सिंन्धु, 2023 “युगद्रष्टा भगतसिंह और उनके मृत्युंजय पुरखें” राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, पृ.159.160

5. महेश शर्मा, “अमर शहीद भगतसिंह” प्रभात पेपर बैंकस, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.127,12

Received on Mar 12, 2024

Accepted on May 25, 2024

Published on Jul 01, 2024

शहीद-ए-आम भगतसिंह का भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में साहसी बलिदान © 2024 by अनिता वेताळ is licensed under CC BY-NC-ND 4.0